फ़ज़ल पर फ़ज़ल

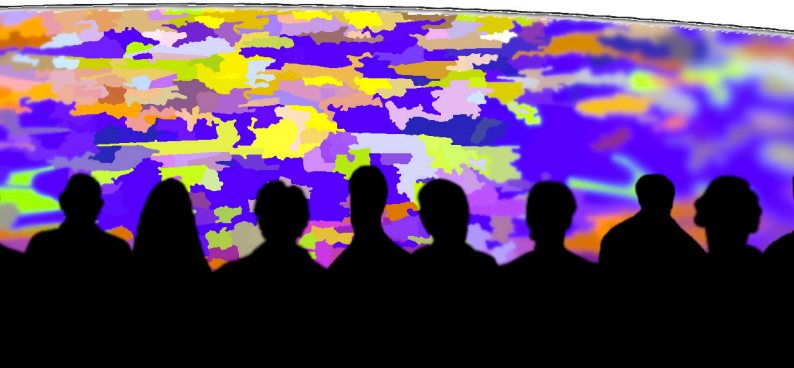

fazal par fazal

Grace Upon Grace

by Bakhtullah

[Ao, Khud Dekh Lo 1]

(Urdu—Hindi script)

© 2023 www.chashmamedia.org
published and printed by
Good Word, New Delhi

The title cover is a collage of
u_bwnedbuxc1 https://pixabay.com/photos/sunrise-world-earth-space-planet-8178734/;
Placidplace https://pixabay.com/illustrations/crowd-people-silhouette-audience-7112474/.

Bible quotations are from UGV.

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

कलाम ने सब कुछ पैदा किया	1
कलाम ज़िंदा करता है	2
कलाम रौशन करता है	3
कलाम के ठोस गवाह	4
कलाम हमें ख़ुदा के फ़रज़ंद बना देता है	5
कलाम हमारे वास्ते इनसान बन गया	7
शरीअत या मसीह का फ़ज़ल?	9
इंजील, यूहन्ना 1:1-18	10

कलाम ने सब कुछ पैदा किया

यूहन्ना की इंजील की पहली बात हमें चौंका देती है। लिखा है,

> इब्तिदा में कलाम था। कलाम अल्लाह के साथ था और कलाम अल्लाह था। (यूहन्ना 1:1)

► **जब हम ख़ुदा का कलाम कहते हैं तो हम क्या कहना चाहते हैं?**

हर वह बात जो ख़ुदा फ़रमाता है।

लेकिन यहाँ यह बुनियादी बात एक और ख़याल से जुड़ गई है। एक ख़याल जो इनक़लाबी है। कलाम एक हस्ती है। एक हस्ती जिसका ख़ुदा से ताल्लुक़ क़रीबतरीन है। हस्ती का नाम ईसा मसीह है।

► **यह कलाम जो ईसा मसीह है कब से है?**

वह इब्तिदा ही से है। अज़ल से।

► **यह कलाम कहाँ था?**

ख़ुदा के साथ।

► **कलाम क्या था?**

ख़ुदा था।

► **इसका क्या मतलब है?**

ख़ुदा जब कुछ फ़रमाता है तो अपने कलाम के वसीले से। तब ही वह पैदा हो जाता है।

ग़ौर करें : यह नहीं लिखा है कि अल्लाह कलाम है बल्कि यह कि कलाम, अल्लाह है। कलाम ख़ुदा की ज़ात में शरीक है मगर ख़ुदा की पूरी ज़ात कलाम की ज़ात पर महदूद नहीं है। ख़ुदा बाप है और ख़ुदा फ़रज़ंद है, मगर बाप फ़रज़ंद नहीं है।

► **लेकिन यूहन्ना यह बात क्यों करता है? क्या यह सिर्फ़ किसी फ़िलॉसफ़र का ख़याली पुलाव है? जिसका हमारे साथ कोई ख़ास ताल्लुक़ नहीं है?**

नहीं। इसका ताल्लुक़ हम सबके साथ है। मुझसे और आपसे भी। पहली बात, यूहन्ना फ़रमाता है कि

> सब कुछ कलाम के वसीले से पैदा हुआ। मख़लूक़ात की एक भी चीज़ उसके बग़ैर पैदा नहीं हुई।
> (यूहन्ना 1:3)

ख़ुदा ने फ़रमाया तो सब कुछ पैदा हुआ। उसके कलाम से सब कुछ पैदा हुआ। यही ईसा मसीह का पहला काम है।

कलाम ज़िंदा करता है

लेकिन कलाम का काम उस वक़्त न रुका। उस वक़्त से उसका काम जारी रहता है। लिखा है,

> उसमें ज़िंदगी थी, और यह ज़िंदगी इनसानों का नूर थी।
> (यूहन्ना 1:4)

हम लाइट बल्ब बना सकते हैं। लेकिन वह उस वक़्त जलेगा जब बिजली मिले। बिजली बंद करें तो लाइट भी बंद। दुनिया भी अपनी ताक़त से ज़िंदा नहीं रह सकती। ख़ुदा का कलाम वह बिजली है जो हर लमहे उसे ज़िंदा रखती है। अगर यह ज़िंदगी न होती तो दुनिया एकदम ख़त्म हो जाती।

हम सभों का दम एक दिन निकल जाएगा। मगर ईसा मसीह हमें एक और क़िस्म की ज़िंदगी दे सकता है : अबदी ज़िंदगी। वह ज़िंदगी जो हमें जन्नत में रहने के क़ाबिल बना देती है।

► **क्या आपको यह अबदी ज़िंदगी हासिल है?**

कलाम रौशन करता है

ईसा मसीह न सिर्फ़ अबदी ज़िंदगी देता है। वह हमें नूर भी पहुँचाता है।

► **इसका क्या मतलब है?**

उसकी ज़िंदगी बिजली जैसी है जबकि नूर बल्ब की रौशनी जैसा है। बिजली मिलते ही बल्ब रौशन हो जाता है। लेकिन नूर रौशनी से फ़रक़ होता है। यह वह रूहानी रौशनी है जो इनसान के दिल को रौशन कर देता है। इसलिए अगली आयत में लिखा है :

> यह नूर तारीकी में चमकता है, और तारीकी ने उस पर क़ाबू न पाया। (यूहन्ना 1:5)

अंधेरे में बत्ती जलाई तो कमरा एकदम रौशन हो जाता है। तब इनसान कोने कोने तक सब कुछ देख सकता है। वह क़रीने से सजी हुई मेज़ को भी देख सकता है और दीवार से चिपके हुए तिलचट्टे को भी। मगर तिलचट्टा तेज़ रौशनी पसंद नहीं करता। उसे देखते ही वह भागकर किसी अंधेरी जगह में छिप जाता है।

नूर का यही असर है। इनसान का दिल रौशन हो जाए तो बहुत कुछ ज़ाहिर हो जाता है।

► **क्या आपकी आँखें इस नूर से रौशन हो गई हैं?**

नूर के सामने नापाक चीज़ें भाग जाती हैं। नूर ज़ाहिर करता है कि इनसान नापाक है। कि वह अपनी ताक़त से पाक-साफ़ नहीं हो सकता। उसे समझ आती है कि इस मनज़िल तक पहुँचने के लिए ज़रूरी है कि मैं पाक हो जाऊँ। कि मेरी ज़िंदगी में गुनाह के तिलचट्टे दूर हो जाएँ। मैं यों गुनाहों में उलझा हुआ जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकता। मुझे मसीह के तेज़ नूर की ज़रूरत है जो मुझे इस गंदी हालत से आज़ाद करे।

कलाम के ठोस गवाह

► **लेकिन यह नूर किस तरह ज़ाहिर हुआ?**

यूहन्ना फ़रमाता है,

> एक दिन अल्लाह ने अपना पैग़ंबर भेज दिया, एक आदमी जिसका नाम यहया था। वह नूर की गवाही देने के लिए आया। मक़सद यह था कि लोग उसकी गवाही की बिना पर ईमान लाएँ।
> (यूहन्ना 1:6)

► **ख़ुदा ने अपने पैग़ंबर यहया को भेज दिया। क्यों भेज दिया?**
उसे नूर की गवाही देनी थी।

इससे मालूम होता है कि इंजील का फ़रमान ठोस है।

► **क्यों?**
इंजील इसलिए ठोस है कि उसके लातादाद गवाह हैं। यहया नबी इस का एक ठोस गवाह था। उसे भेज दिया गया ताकि वह नूर के आने से पहले पहले गवाही दे कि जिस नूर की पेशगोई बार बार की गई है वह जल्द ही आने को है। अब ईसा मसीह आने को है। नूर की आमद के बाद भी सैंकड़ों लोग उसकी बातों और कामों के गवाह हुए, और पहले गवाहों ने यह गवाहियाँ इंजील की सूरत में क़लमबंद कीं।

कलाम हमें ख़ुदा के फ़रज़ंद बना देता है

ईसा मसीह कलाम है जिसके वसीले से दुनिया पैदा हुई। वह हमें ज़िंदगी और नूर पहुँचा देता है।

► **क्या यह ख़ुशी की बात नहीं है?**

ज़रूर। लेकिन अफ़सोस, सबने उसे क़बूल न किया। लेकिन कुछ इस नूर से रौशन हुए। लिखा है,

> कुछ उसे क़बूल करके उसके नाम पर ईमान लाए। उन्हें उसने अल्लाह के फ़रज़ंद बनने का हक़ बख़्श दिया। (यूहन्ना 1:12)

यह एक राज़ है कि बहुत-सारे लोग उस पर ईमान नहीं लाते। लेकिन जिन्हें वह ईमान लाने की तौफ़ीक़ बख़्श देता है वह नूर से रौशन हो जाते हैं। उन्हें अबदी ज़िंदगी मिलती है। न सिर्फ़ यह बल्कि वह ख़ुदा के फ़रज़ंद भी बन जाते हैं। उसके ख़ानदान के भाई-बहनें।

► **किस तरह?**

लिखा है कि वह ऐसे फ़रज़ंद हैं

> जो न फ़ितरी तौर पर, न किसी इनसान या मर्द के मनसूबे से पैदा हुए बल्कि अल्लाह से। (यूहन्ना 1:13)

मतलब है इसमें न इनसान का हाथ है, न उसकी मरज़ी। यह ख़ुदा की तरफ़ से एक रूहानी काम है। ज़ाहिर है कि ख़ुदा के साथ रिश्ता कभी फ़ितरी या इनसान के हाथ से क़ायम नहीं हो सकता। ग़रज़ ख़ुदा ही हमें अपने फ़रज़ंद बना देता है, और यह एक रूहानी रिश्ता है।

कलाम हमारे वास्ते इनसान बन गया

► **लेकिन यह रिश्ता किस तरह क़ायम हो जाता है?**

यूहन्ना फ़रमाता है,

> कलाम इनसान बनकर हमारे दरमियान रिहाइश-पज़ीर हुआ और हमने उसके जलाल का मुशाहदा किया। वह फ़ज़ल और सच्चाई से मामूर था और उसका जलाल बाप के इकलौते फ़रज़ंद का-सा था। (यूहन्ना 1:14)

ईसा मसीह अज़ल से ख़ुदा बाप का इकलौता फ़रज़ंद है। उस से सब कुछ पैदा हुआ, और वह दुनिया की ज़िंदगी और नूर है। उस ने दुनिया की ख़राब हालत देखी तो रंजीदा हुआ। हर तरफ़ धोका ही धोका। हर तरफ़ लूट-खसोट। इनसान ख़ुदा से दूर, बहुत दूर हो गया था।

► **अब वह क्या करे?**

वह हम सब को ख़त्म कर सकता था। लेकिन उस ने ऐसा न किया। उसे हम पर रहम आया, और उस ने कुछ और किया।

► **क्या किया?**

वह इनसान बनकर हमारे दरमियान आ बसा। वह पूरी तरह इनसान बन गया। उसका गोश्त और ख़ून था। वह दर्द और दुख महसूस कर सकता था। गो वह कलाम था तो भी उसने इनसान की फ़ितरत

अपना ली। जो बेगुनाह था वह इनसान बन गया। उसने हमारे वास्ते अपनी जान दी ताकि हम ख़ुदा के फ़रज़ंद बन जाएँ।

जिसका तरजुमा रिहाइशपज़ीर से हुआ है उसका लफ़्ज़ी तरजुमा तम्बू लगाना है : कलाम ने हमारे दरमियान तम्बू लगाया।

► **यूहन्ना यह क्यों फ़रमाता है?**

सदियों पहले ख़ुदा ने सीना पहाड़ पर मूसा पर शरीअत नाज़िल की थी। जब मूसा पहाड़ से उतरा तो उस वक़्त उसकी जिल्द शरीअत के जलाल से चमक रही थी। यह देखकर लोग डर गए। मूसा को अपने चेहरे पर निक़ाब डालना पड़ा। उस ने पहाड़ के दामन में एक तंबू लगाया जिसका नाम उसने मुलाक़ात का ख़ैमा रखा। जब कभी वह उसमें जाकर ख़ुदा के फ़रमान सुनता तो निक़ाब उतारता। लेकिन निकलते वक़्त वह दुबारा मुँह पर निक़ाब ढाँप देता ताकि इसराईली उस का चमकता मुँह देखकर डर न जाएँ (ख़ुरूज 33:7-11; 34:29-35)।

► **यह जलाल मूसा के चेहरे से क्यों चमकने लगा?**

यह शरीअत के जलाल का असर था।

इसराईली शरीअत का यह जलाल बरदाश्त नहीं कर सकते थे जो मूसा के चेहरे से चमक रहा था। ईसा मसीह जब इनसान बन गया तो उसने भी मुलाक़ात का ख़ैमा लगाया। उसके ज़रीए हमारी ख़ुदा से मुलाक़ात

मुमकिन हो गई है। जो नामुमकिन था वह मसीह में मुमकिन हो गया। क़ुद्दूस ख़ुदा से मुलाक़ात। क़ुद्दूस ख़ुदा से रिश्ता।

शरीअत या मसीह का फ़ज़्ल?

यही वजह है कि यूहन्ना फ़रमाता है कि

> उसकी कसरत से हम सबने फ़ज़्ल पर फ़ज़्ल पाया। क्योंकि शरीअत मूसा की मारिफ़त दी गई, लेकिन अल्लाह का फ़ज़्ल और सच्चाई ईसा मसीह के वसीले से क़ायम हुई। (यूहन्ना 1:16-17)

सीना पहाड़ पर शरीअत मूसा पर नाज़िल हुई, मगर जो कुछ ईसा मसीह से मिला है वह शरीअत से कहीं बेहतर है।

► **क्यों?**

शरीअत हमें बताती है कि हमें क्या करना है। लेकिन हम सबके सब फ़ेल हैं। हममें से कोई भी शरीअत को पूरा नहीं कर पाता। उसके जलाल के सामने हम इसराईलियों की तरह डरकर भाग जाते हैं। बार बार हम शरीअत के तक़ाज़े पूरे करने से महरूम रहते हैं। जो सच्चाई और वफ़ादारी ख़ुदा हममें देखना चाहता है वह बहुत माँद पड़ी रहती है। यही वजह है कि ईसा मसीह की ज़रूरत है।

वही ख़ुदा का कलाम है।

वही हमें ज़िंदगी देता है।

वही हमें अपने नूर से रौशन करता है।

वही अपने फ़ज़ल से हममें वह सच्चाई क़ायम करता है जो हमें जन्नत में दाख़िल होने लायक़ बना देती है।

► **क्या आपको यह फ़ज़ल हासिल हुआ है?**

इंजील, यूहन्ना 1:1-18

इब्तिदा में कलाम था। कलाम अल्लाह के साथ था और कलाम अल्लाह था। यही इब्तिदा में अल्लाह के साथ था। सब कुछ कलाम के वसीले से पैदा हुआ। मख़लूक़ात की एक भी चीज़ उसके बग़ैर पैदा नहीं हुई। उसमें ज़िंदगी थी, और यह ज़िंदगी इनसानों का नूर थी। यह नूर तारीकी में चमकता है, और तारीकी ने उस पर क़ाबू न पाया।

एक दिन अल्लाह ने अपना पैग़ंबर भेज दिया, एक आदमी जिसका नाम यहया था। वह नूर की गवाही देने के लिए आया। मक़सद यह था कि लोग उसकी गवाही की बिना पर ईमान लाएँ। वह ख़ुद तो नूर न था बल्कि उसे सिर्फ़ नूर की गवाही देनी थी। हक़ीक़ी नूर जो हर शख़्स को रौशन करता है दुनिया में आने को था।

गो कलाम दुनिया में था और दुनिया उसके वसीले से पैदा हुई तो भी दुनिया ने उसे न पहचाना। वह उसमें आया जो उसका अपना था, लेकिन उसके अपनों ने उसे क़बूल न किया। तो भी कुछ उसे

क़बूल करके उसके नाम पर ईमान लाए। उन्हें उसने अल्लाह के फ़रज़ंद बनने का हक़ बख़्श दिया, ऐसे फ़रज़ंद जो न फ़ितरी तौर पर, न किसी इनसान या मर्द के मनसूबे से पैदा हुए बल्कि अल्लाह से।

कलाम इनसान बनकर हमारे दरमियान रिहाइशपज़ीर हुआ और हमने उसके जलाल का मुशाहदा किया। वह फ़ज़ल और सच्चाई से मामूर था और उसका जलाल बाप के इकलौते फ़रज़ंद का-सा था।

यहया उसके बारे में गवाही देकर पुकार उठा, “यह वही है जिसके बारे में मैंने कहा, ‘एक मेरे बाद आनेवाला है जो मुझसे बड़ा है, क्योंकि वह मुझसे पहले था।’”

उसकी कसरत से हम सबने फ़ज़ल पर फ़ज़ल पाया। क्योंकि शरीअत मूसा की मारिफ़त दी गई, लेकिन अल्लाह का फ़ज़ल और सच्चाई ईसा मसीह के वसीले से क़ायम हुई। किसी ने कभी भी अल्लाह को नहीं देखा। लेकिन इकलौता फ़रज़ंद जो अल्लाह की गोद में है उसी ने अल्लाह को हम पर ज़ाहिर किया है।